श्री जनेश्वर मिश्र : मैडम, यह एक सलाह हैं और इस पर विचार किया जा सकता हैं ।

Setting-up of Mini Refineries

*242. SHRI VEDPRAKASH P. GOYAL: Will the Minister of PETROLEUM AND NATURAL GAS be pleased to state:

(a) whether the cono^t of setting-up of mini refineries as per the agreement reached between Indian Institute of Petroleum and US based United Technologies Inc., has been conveyed to oil industry and business houses;

(b) if so, the details of the concept;

(c) the advantages of having such refineries; and

(d) by when it is likely to be implemented?

THE MINISTER OF PETROLEUM AND NATURAL GAS (SHR; JANESHWAR MISHRA): (a) to (d) A statement is laid on the Table of tlie House.

Statement

(a) to (d) A concept of setting up mini refinery has been prepared by Indian Institute of Petroleum (IIP), Dehra Dun in agreement with United Technologies Inc., (USA). The concept of Mini Refinery is to convert small quantities of crude oil available mainly from specific small oil fields located in remote areas having insufficient rail/road transportation facilities.

The concept was examined in consultation with the Oil Industry and it has revealed that further analysis need to be done by IIP -to establish the techno-economic feasibility of setting up such a mini refinery in India.

श्री वेद प्रकाश पी. गोयल : महोदया, हमसे अपेक्षित हैं कि हम सवाल पाइंटिड करें । क्या मैं मंत्री महोदया से पूछ सकता हूं कि क्या वे भी अपेक्षित सवालों का पाइंटिड जवाब देंगे ? मेरे चारों सवालों का कोई जवाब इनके उत्तर में नहीं हैं और उसी में से मेरा सप्लीमेंट्री प्रश्न पैदा होगा ।

पहले प्रश्न में मैंने पूछा था ऑयल इंडस्ट्री से कंपर्न्ड तेल उद्योग और बिजनिस हाउसिज को इस अवधारण की जानकारी दी हैं कि नहीं इसके जवाब में कहा हैं कि ऑयल इंडस्ट्री से कंसल्ट किया हैं । आज लिबरलाइ-जेशन के जमाने में ऑयल इंडस्ट्री के सिवाय जो दूसरे बिजर्निस में इन्टरेस्टिड हैं वह भी इसको पिक-अप कर सकतें हैं, उनसे कोई सलाह नहीं हुई और उनको शायद यह कनवे भी नहीं किया ।

दूसरा, मैंने पूछा था कि डिटेल, क्या हैं ? मिनी का मतलब क्या हैं ? हर क्षेत्र में मिनी का कोई मतलब होना हैं, जिसने जो मतलब निकालना हो वह नहीं निकाल सकता हैं । इसका मिनिमम और मैक्सिमम साइल क्या हैं, किस परिधि के अन्दर यह बैठता हैं, इसका कुछ मालूम नहीं हैं । मिनी रिफाइनरी का जो सवाल था वही जवाब में रिपीट कर दिया हैं ।

तीसरा, मैंने पूछा था कि इसके इडवांटेजिज क्या है ? उसका जवाब में कोई जिक्र नहीं हैं । आखिर जब एग्रीमेंट किया हैं तो कुछ एडवांटेज तो इसके बताये होंगे । एग्रीमेंट कैसे किया, क्यों सरकार ने पैसा खर्चा ?

चौथा सवाल था कि इसको कब इम्पलीमेंट करने वाले हैं ? आज इतनी एनर्जी क्राइसिज हैं, उसके बावजूद भी इसको अभी आई.पी. पी. एक्जामिन करेगी, एनालाइज करेगी कब जवाब देगी, कब होगा, इसकी कोई कल्पना नहीं हैं, इसका कोई संकेत नहीं हैं ।

मैं पहला पूरक प्रश्न पूछना चाहता हूं कि इसकी कल्पना क्या हैं और कहां-कहां पर ऐसे ऑयल फील्ड मिले हैं ? और प्राईवेट सेक्टर को या किसी और को इसमें इन्वाल्व करने का आपका कोई इरादा हैं या नहीं है ?

श्री जनेश्वर मिश्र : मैडम, मिनी रिफाइनरी का मतलब हैं कि .05 से लेकर के .5 तक जिस रिफाइनरी से प्रोडक्शन एनुअली होता हैं उसके मिनी रिफाइनरी कहा जाता हैं ।

श्री वेद प्रकाश पी. गोयल : यूनिट क्या हैं ?

श्री जनेश्वर मिश्र : मीट्रिक टन । मैडम, असल में यह आउट-डेंटिड टैक्नोलोजी हैं ।

प्रो. राम बख्य सिंह वर्मा : मिलियन या मैट्रिक टच ?

श्री जनेश्वर मिश्र : मैट्रिक टन । ...(**व्यवधान**)...

श्री राधवजी : 0.5 का मतलब क्या हैं ?

श्री जनेश्वर मिश्र : 0.5 में मायने-बहुत कम हैं, इसको क्या जोड़े, जहां तक आउट डेटेड टैक्रोलोजी हैं, देहरादून में हमारा जो इंस्टीट्यट हैं, यह सी. एस. आई. आर. का हैं । यह रिसर्च एंड डवलपमेंट का काम करता हैं । एक अमेरिकी कम्पनी से अभी उसकी अंडरस्टेडिंग हुई हैं और उसने उसको हमारे यहां भेजा हैं । हमारा मंत्रालय इस तरह के मिनी प्लांट के बारे में फिजिबिलिटी देखता हैं और आम तौर से इनकी फिलिबिलिटी होती नहीं हैं । क्योंकि हमारा इस तरह का एक छोटा प्लांट देश भर में –मद्रास में हैं और वहां से जो उत्पादन होता हैं बड़े कारखानों के मुकाबले चौथाई के बराबर हो जाता हैं । तो इस तरह की बातों को बहुत तरजीह नहीं दी जाती और सवाल ही नहीं पूछा जाता ।

चीन में इस तरह से मिनी प्लांट बहुत थे । उनको बैन करने की बात चल रही हैं । इस समय तो यह देखा जाता हैं कि ऐसी टेक्रोलोजी निकाली जाए जिससे कि तेल और उसका उत्पाद कम से कम दाम पर उपभोक्ताओं को मिल सके । यह बहुत महंगी चीज हैं । तो इसकी फिजिबिलिटी अध्ययन करने के लिए जितना समय लगता हैं वह लग रहा हैं ।

श्री वेद प्रकाश पी. गोयल : महोदया, मंत्री जी ने कहा कि आउट डेटिड टेक्रोलोजी हैं । चीन में भी छोटे-मोटे प्लांट बंद हो रहे हैं । तो सरकार का पैसा क्यों जाया कर रहे हैं । दोबारा, उसकी फिजिबिलिटी को अपनी इंडियन पैट्रोलियम कम्पनी स्टडी करे, यह रिसोसेंज को क्यों वेस्ट कर रहे हैं । उसी रिसोर्सेज को लगाकर और कोई बड़ा रिफाइनरी प्लांट खड़ा किया जा सकता हैं । इसके बारे में उनको स्वयं मालूम हैं कि इसमें कुछ होने वाला नहीं हैं, कास्ट भी चार गुना आती हैं । तो यह सारा नाटक करने की जरूरत क्या हैं ।

मैं दूसरा सवाल पूछना चाह रहा हूं कि कोई तो टाईम फ्रेम होगा जिसमे आप या तो इसको टेक-अप करेंगे या इसको ड्रोप करेंगे । कोई सीमा हैं या यह अध्ययन होता ही रहेगा ?

श्री जनेश्वर मिश्र : मैडम, कई चीज़ों का अध्ययन करना पड़ता हैं । नम्बर-1, दूरदराज के इलाके में कहीं तेल निकल गया उसको बड़ी रिफाइनरी तक ले जाने में ढुलाई खर्चा देना होगा, दूसरे, जो तेल निकालकर और उसको रिफाइनरी के जरिए हम कुछ पैदा कर सकते हैं दूसरी किस्म का तेल-क्रूड ऑयल । तो उसके लिए नजदीक में मार्केट हैं या नहीं और यह अध्ययन करने में समय तो लगता ही हैं । आम तौर से जहां इस तरह का तेल निकलता हैं नजदीक की बड़ी रिफाइनरी में उसको भेज दिया जाता हैं ।

श्री वेद प्रकाश पी. गोयल : ऐसा तेल मिला हैं क्या काफी मात्रा में ? देश भर में कोई 100-50 जगह हैं क्या ?

श्री जनेश्वर मिश्र : 100-50 तो नहीं हैं लेकिन दो –चार हैं ।

श्री वेद प्रकाश पी. गोयल : क्यों वेस्ट कर रहे हैं ।

श्री जनेश्वर मिश्र : एक तो रवा हैं आंध्र प्रदेश में, ऐसे ही एक अरुणाचल प्रदेश में हैं । एक-दो जगह और मिला हैं जैसे मद्रास में बताया गया । लेकिन ऐसे ही बहुत मेहनत से और कहीं-कहीं निकल आता हैं खुदाई में । उसकी मात्रा कितनी हैं इसकी गारंटी नहीं होती । अगर कोई भी प्लांट हम लगाएंगे तो 50 साल, 100 साल के लिए लगाएगें । अगर उसके नीचे की मात्रा खत्म हो जाए तो वह पैसा बिल्कुल निरर्थक चला जाएगा । इसलिए इसको अध्ययन करने में बहुत वक्त लगता हैं ।

श्री जलालुदीन अंसारी : महोदया, भारतीय पैट्रोलियम संस्थान, देहरादून ने अमेरिका की यूनाईटेड टेक्रोलोजिज इंक, के साथ करार करके लघु रिफाइनरी बनाने की अवधारणा तैयार की हैं । मंत्री जी ने अपने उत्तर में यह बताया हैं कि तेल उद्योग के साथ परामर्श करके इस अवधारणा की जांच की गई और यह बात सामने आई कि भारत में ऐसी लघु रिफाइनरी की स्थापना की तकनीकी, आर्थिक व्यवहारिकता देखने के लिए भारतीय पैट्रोलियम संस्थान द्वारा और अधिक विश्लेषण करने की आवश्यकता हैं । मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि इसकी फिजिबिलिटी तय करने के लिए कालबद्ध प्रोग्राम हैं और कब तक इसको करेंगे कोई अवधि निश्चित हैं ? इसकी फिजिबिलिटी पर बहुत दिनों तक काम करते चलेंगे तो इसका कोई परिणाम नहीं निकलेगा । मैं इसी बात को जानना चाहता हूं कि भारतीय पैट्रोलियम संस्था कब तक इसकी व्यवहारिकता सिद्ध करने में सफल होगी ?

† **شری جلال الدین انصاری "جاری"**: یا اسکی فزیبیلٹی پر بہت دنوں تک کام کرتے

چلیگے تو اسکا کوئی نتیجہ نہیں نکلے گا۔ میں اس بات کو جاننا چاہتا ہوں کہ بھارتیہ پیٹرولیم سنستھا کب تک اسکی ویوھارتا سدھ کرنے میں کامیاب ہوگی۔

श्री जनेश्वर मिश्र : माननीय सदस्य खुद कह रहे हैं कि देहरादून के इंस्टीट्यूट ने इसकी अवधारणा जाहिर की हैं । अवधारणा की व्यवहारितका कितने दिनों में तय होती हैं इसकी कोई निश्चित तारीख नहीं हैं।

PROF. RAM KAPSE: The feasibility report was made not by the Department, but by the institution in consultation with a U.S. company. I would like to know when the feasibility report was submitted to your department and how much time your department will take to study the issue.

प्रो. राम बख्य सिंह : मैं माननीय मंत्री जी के उत्तर के संबंध में जानना चाहता हूं कि जो मिनी रिफाइनरी लगनी हैं उसकी व्यवहार्यता के बारे में उन्होंने कहा हैं कि इसकी कैपेसिटी 0.5 से लेकर .5 मीट्रिक टन तक होगी । मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि .5 मीट्रिक टन का मतलब तो शायद 5 क्विंटन होता हैं और .05 का अर्थ आधा क्विंटन होता हैं तो क्या इतने स्माल स्क्रेल पर मिनी रिफाइनरी लगाने की कोई व्यवहारिता होगी ?

माननीय सदस्य : इसमें गलती तो नहीं हैं ?

श्री जनेश्वर मिश्र : खैर हिसाब-किताब बाद में होगा । वह मैं जोड़कर बात दूंगा लेकिन जहां कहीं भी तेल निकल आता हैं, उसमें एक संभावना तो यह रहती हैं कि इसके नीचे और निकलेगा । तो वह तो हमें पता नहीं हैं । हमने शुरू में कह दिया हैं कि इसकी व्यवहारिकता के बारे में बहुत विवाद चल रहा हैं । शुरू में जमाने में सौ साल पहले इस तरह की रिफाइनरी लगा करती थी । डिगबोई रिफाइनरी भी उसी समय में लगी थी । लेकिन अब इस तरह की रिफाइनरी आमतौर से लोग नहीं लगाते हैं ।

श्री गोविन्दराम मिरी : उन्होंने जो हिसाब-किताब बताया हैं वह सही हैं या नहीं हैं ?

श्री जनेश्वर मिश्र : हिसाब-किताब बाद में जोड़ा जायेगा ।

THE DEUPTY CHAIRMAN: Is it one metric ton or million tonne? Metric ton?

SHRI JANESHWAR MISHRA: Yes.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Then it Is very small. Now, Shri Parag Chaliha,

SHRI PARAG CHALIHA: Madam, as we all know, in Assam, we have one of the oldest refineries in the world, the Digboi Refinery. The capacity was 0.75 million till the other day. It was then raised to a maximum capacity of one million only. In the same way, there was a big movement in respect of the establishment of the Barauni Refinery with crude oil entirely from Assam and as a sequel to the movement, a toy refinery was established at Guwahati, known as the Guwahati Refinery. As far as I know, the capacity of the Guwahati Refinery, after all these developmental works and all tTiat, came to be about one million. May I know from the Minister who has recently taken charge and is hopeful about them, whether any plans are afoot to develop one of the oldest refineries of the world, the Digboi Refinery, and the Guwahati Refinery, which has been so far known as only a^ toy refinery.Is there any plan for that ?

श्री जनेश्वर मिश्र : मैडम, मैं पहले करेक्ट कर दूं अपने को, वह मिलियन टन था, मीट्रिक टन नहीं । हम गलत बोल गये थे और गलती के लिए माफी मांगना भी हमें आता हैं ।

THE DEPUTY CHAIRMAK: Be- 1 cause oil is always measured in million tonnes, noi(in metric tonnes.

श्री जनेश्वर मिश्र : दूसरी बात जो उन्होंने डिगबोई के बारे में पूछी, डिगबोई की केपेसिटी शुरू के दिनों में, 100 साल पहले .05 मिलियन टन थी । अब वह बढ़ कर के 0.65 मिलियन टन हो गई हैं । वहां पर बाहर से भी क्रूड भेजा जाता हैं और कुछ बनने के लिए गोहाटी के बारे में भी उसकी क्षमता घट रही हैं । सरकार की तरफ से प्रयास होगा कि इसको बढ़ाया जाए ।

SHRI PARAG CHALIHA: Madam, the Minister has not addressed himself to the main thrust of my quesiton. I want to know whether there is any plan to de- velop these refineries, particularly, the DigBoi refinery, in view of the fact that it is one of the oldest refineries in the world.

श्री जनेश्वर मिश्र : हमने शुरू में ही कह दिया हैं कि विकसित करने के लिए प्रयास किया जाएगा।

श्री नरेन्द्र मोहन : माननीय मंत्री जी ने अपने उत्तर को स्पष्ट कर दिया कि यह मिलियन टन था। वह तो ठीक हैं लेकिन जैसे कि आपने स्वयं बताया कि इतनी छोटी, मिनी रिफाइनरी लगाने के लिए जो उत्पादन लागत आने वाली हैं, वह चौगुनी अधिक आने वाली हैं, इसलिए इसकी उपयोगिता नहीं हैं। जब आप स्वयं इस बात हो महसूस कर रहे थे कि इतनी छोटी रिफाइनरी लगाने से कोई उपयोगिता नहीं हैं तब इस प्रकरण को समाप्त करने के लिए निर्देश देने में आपको क्या कठिनाई हैं ?

दूसरी, इसी संदर्भ की बात हैं कि पैट्रोलियम की फिर भी देश को आवश्यकता हैं । आपके समक्ष गैसो-आयल के प्रोजेक्ट के बारे में कई बार चर्चा आ चुकी हैं। उसके बारे में आप क्या सोच रहे हैं ?

श्री जनेश्वर मिश्र : फीज़िबिलिटी रिपोर्ट तैयार करते समय कई चीजें विचार की जाती हैं। शुरू में मैंने कहा था कि दूरदराज़ में अगर कहीं तेल निकलता हैं तो उसको रिफाइनरी तक ले जाने में ढुलाई का ज्यादा खर्च न पड़ जाए, एक तो उसको सोचा जाता हैं। दूसरा यह सोचा जाता हैं कि जहां तेल निकला हैं उसके नज़दीक कोई मार्किट हैं या नहीं। आखिर तक इसका अध्ययन करते रहना चाहिये कि अगर किसी तरह से तेल वहां पहुंचा देने के लिए जो नज़दीक का इलाका हैं, ढुलाई का खर्च बच जाए तो इस पर विचार करते रहना चाहिये और यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया हैं। इसलिए दरवाजा कभी बन्द नहीं करना चाहिये, मैं इस राय का हूं। गैसो-आयल के बारे में माननीय सदस्य को मैं विभाग से जानकारी ले कर बता दूंगा।

*243. [The Questioner (Shrl Karnendu Bhattacharjcc) was absent. For answer *vide* col infra]

*244. [The Questioner (Shri Ram Jcth-malani) was absent. For answer *vide* col-infra]

Revival of MCFL by KRIBHCO

*245. SHRI NILOTPAL BASU:
SHRI JIBON ROY:

Will the Minister of CHEMICALS AND FERTILIZERS be pleased to refer to answers to the Unstarred Questions 4459, 746 and' 801 given in the Rajya Sabha on the 16th May, 1997, 28th February, 1997 and 29th November, 1996, respectively, and state:

(a) whether the commitments of KRIBHCO for its ongoing projects had to be changed to undertake the revival of MS Mangalore Chemcials and Fertilizers Limited (MCFL);

(b) if so, the changes made; and

(c) if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI M. ARUNACHALAM): (a) to (c) No investment decision in regard to the rehabilitation of Mangalore Chemicals & Fertilizers Ltd. (MCFL) has been taken by KRIBHCO which is exploring its feasibility as a diversification option. KRIBHCO has not changed any of its investment commitments on account of its interest in the rehabilitation of MCFL.

The question was actually asked on the floor of the House by Shri Nilatpal Basu.

SHRI NILOTPAL BASU: Madam, you had been a witness to the agitation yesterday in this House about the revival of sick public sector fertilizer units. Now, FRIBHCO is a cooperative sector fertilizer unit in which the Government of India has 80 per cent equity. This company is paying tax to the tune of Rs. 85 crores every year. Because of the huge cash reserves it was contended earlier that some of the surplus could be invested to revive sonrc of the public sector units. It was mentioned earlier by the Ministry of Chemicals and Fertilizers that this could not be done because of their pre-occupa-tion with other investment decisions.